JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

संस्मरण लेखन में कान्तिकुमार जैन का अवदान

Aarti Singh Thakur

Researcher, MCBU, Chatarpur.

1 प्रस्तावना– हिंदी में संस्मरण लेखन अपेक्षाकृत नई विधा हैं। द्वितीय महायुद्ध के बाद विश्व में जीवन –स्थितियों और मूल्यों में इतना परिवर्तन हुआ कि साहित्य की परंपरागत विधाओं में उनका चित्रण पूरी तरह से संभंब नही रह गया , फलतः कविता, उपन्यास,कहानी,नाटक आदि विधाओं के अतिरिक्त संस्मरण रिपोतार्ज यात्रा विवरण ,डायरी जैसी विधाएँ साहित्यकारों के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। कहा गया है जैसे नीचे गिरकर एक दर्पण अनेक टुकडों में विभक्त हो जाता हैं वैसे ही साहित्य का दर्पण भी टुकडे–टुकडे होकर अनेक नई–नई विधाओं में विभक्त हो गया । किन्तु जैसे दर्पण के टुकड़ों में प्रतिबिम्ब पूरा दिखाई देता हैं।वैसे ही साहित्य की इन विधाओं में भी जीवन के पूर्ण प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं।

हिंदी में संस्मरण का इतिहास बहुत पुराना नहीं हैं।हिंदी में गद्य साहित्य का जन्म भारतेंन्दु के समय से स्वीकार किया जा सकता हैं। प्ररम्भ में जीवनी आत्मकथा और संस्मरण में बहुत भेद नही किया जाता था। आत्मकथाएँ लेखक की अपनी कथाएँ होती थी, किन्तु जीवनी तो दूसरों की ही कथाएँ होती थी। हिंदी के प्राराम्भिक जीवनीकारों और आत्मकथा लेखकों में श्याम सुंदरदास ,रामचन्द्र शुक्ल ,प्रेंमचद्र ,जयशंकर प्रसाद, राधाकृष्णदास जैसे लेखकों का नाम का नाम लिया जाता है। उल्लेखनीय हैं कि ये सारे लेखक साहित्य की अन्य विधाओं में लिखतें थे।संस्मरण और संस्मरणीय की अन्तःक्रिया के बिना संस्मरणों की कल्पना ही नही की जा सकती हमारे देश में दासता से मुक्ति के लिए जब स्वतंन्त्रता आन्दोंलन चल रहा था तो अपने नेताओं की प्रशस्ति उनके ,गुणों का गान,उनकी महत्ता का बखान आवश्यक था।इसलिए बहुत दिनो तक हिंदी का संस्मरण लेखन प्रशस्तिमूलक ही रहा।हिंदी के अप्रतिम गध्य शिल्पी 'पाण्डेय वेचन शर्मा उग्र' का प्रसिद्ध संस्मरण पुस्तक 'अपनी खबर' में संस्मरणों की अच्छाईयों का ही चित्रण नही किया गया है।अपितु उनकी दुर्बलताओं का भी चित्रण किया गया हैं।उपेन्द्र नाथ अश्क,रामवृक्ष बेनीपुरी के संस्मरण इसी कोटी के हैं।महादेवी वर्मा ने संस्मरणों के इतिहास में विशिष्ट योग दिया हैं। उन्होंनें ना केवल व्यक्तियों के संस्मरण लिखे बल्कि पशु–पक्षियों कें संस्मरण भी ,मेंरा परिवार नामक पुस्तक में अंकित किए।

संस्मरण लेखन को सारे देश मे लोकप्रिय बनाने का श्रेय प्रो० कान्तिकुमार जैन को हैं।संस्मरण साहित्य के विकास में कान्तिकुमार जैन का हस्तक्षेप इतना आप्रत्याशित और नई–नई अर्थ छवियों से भरा था कि इस समय की प्रतिष्ठत पत्रिकाओं हॅस,वसुधा ,नया ज्ञानोदय आदि के लिए अनिवार्य हो गए।उनके

संस्मरण का क्षेत्र बहुत व्यापक है।उनके संस्मरण अपने समय का सामाजिक सांस्कृतिक इतिहास हैं।उन्होंनें अपने मिलने बालो पर तो संस्मरण लिखे ही हैं।नजीर अकबराबादी और सुभद्रकुमारी चौहान जैसे व्यक्तियों पर जिनसें वे कभी मिले भी नही, संस्मरण लिखकर इस विधा का अभूतपूर्व विकास किया हैं।वे संस्मरण लेखन को लेकर सर्मपित हैं।उनके पास संस्मरण का अथाह भण्डार हैं।

कान्ति कुमार जैन की सृजनात्मकता की नींव बैकुण्ठपुर के बचपन में ही पड गई होगी।इस सृजनात्मकता के मनोविज्ञान पर विचार करने से ,कुछ पहलु उभरते है जो उनके लेंखन के दायरे को विस्तृत करते है। कान्तिकुमार जी एक वैज्ञानिक की तरह सूक्ष्म निरीक्षण करते हैं।उनकी इस क्षमता ने ही उनकी सृजनात्मकता को पल्लिवित किया हैं।वास्तिविक जगत में व्यक्ति के क्रिया कलापों की,लोक संस्कृति की ,प्रकृति की बैलगाडी की ,गेदी के गोदने की ,चिलविलहिन और उसके साईस पति की ,वनस्पति एवं प्रणी जगत के अंतरंग रहस्यों की पहचान की ।गेंज नदी और सॉपो की वामी का वस्तृत विवरण सूक्ष्म निरीक्षण से ही संभव हो सकता है। [1]

कान्तिकुमार जी हिंदी साहित्य जगत में कविता, आलोचना, ललित निबंध और अनुवाद के माध्यम से अपनी विशिष्ट पहचान बनाई हैं।कान्तिकुमार जी ने 1996 में 'श्रीमति सुधाअमृत राय' पर अपने संस्मरण साहित्य का पहला संस्मरण लिखा था जो 'सुधा जीजी की याद में' शीर्षक से वसुधा के अप्रैल–अक्टूबर 1996 के अंक में प्रकाशित हुआ था।कान्तिकुमार जी के संस्मरण पर अब तक कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं 'वसुधा' ,'सापेक्ष','नया ज्ञानोदय',और हंस जैसी पत्रिकाओं में संस्मरण प्रकाशित हो चुकी हैं।

इन संस्मरणों के संस्मृत व्यक्तियों में ओशो से लेकर सागर के पप्पू खबास तक हैं। कान्तिकुमार जी ने –'लौट कर आना नहीं होगा 'में लिखा हैं कि मैनें संस्मरण लेखन में ''सत्य बूयात प्रियं ब्रूयात न ब्रूयात सत्यप्रियंम'' इस सुभाषित का पालन नहीं किया हैं।कान्तिकुमार जी ने उस आर्ष वाक्य को अपना आदर्श बनाया हैं ,जिसमें कहॉ जाता है कि 'सत्य सदैव कड़वा होता हैं'।संस्मरण जिन व्यक्तियों पर लिखे गए हैं उन्हें पूरी ईमानदारी से कान्तिकुमार जी ने अपने स्मृति पटल से कागज पर उकेरने का प्रयत्न किया है पर जब इन संस्मरणों पर कलात्मकता का रन्दा चलाया तो सागौन की लकड़ी के समान चरित्र वाले अपनी मसृणता और कलात्मकता के साथ और सास्वर हो गये और तेन्दु,बबूल या सतकठा के चरित्र वालो की गॉठं और दरारे उभर कर सामने आई गई ।[2]

''लौट कर आना नहीं होगा'' संस्मरण में सोलह संस्मरण संकलित हैं ।ये संस्मरण स्मृतियों की अनमोल मंजूषा हैं। कान्ति कुमार जी अपने ऐकान्त क्षणों में अपने मन को ,अपने अवचेतन को ,अतीत की उस खोह तक ले जाते थे जहॉ अनेक भावनाएँ अनेक व्यक्तित्व ,अनेक घटनाएँ विभिन्न रंगो में चक्षुओं के समझ एक ऐसा नैसगिक संसार रचती कि अतीत की खोह की मंद रोशनी में उनकी लेखनी स्मृत का ऐसा चित्र रच देती हैं ।जिसमें वह अपने समस्त शुभ–अशुभ भाव, राग–द्वेश, मैत्री बैर ,अनुराग–विराग,ज्ञान–अज्ञान के साथ पाठक के सामने सतरंगी रंगों में उपस्थित हो जाता हैं।इन सात रंगों में स्मृत के जीवन के काले–उजले, लाल–पीले, हरे –गुलाबी सभी रंग है।कान्तिकुमार जी से पूर्व प्रायः संस्मरण लेखक स्मृत के जीवन के काले रंग को प्रस्तुत करने में डरते थे या ऐसा करना

शोभनीय नही मानतें थे कि जो दिवंगत हो चुका हैं उनके काले रंग पर क्या लिखना ,जो जीवित हैं उनके काले रंग को दिखा दिया तो उनकी छवि धूमिल हो जाएगी ।[3]

इक्कीशवी सदी के साहित्यकारों में अपने संस्मरण में सामाजिक,राजनैतिक, और संस्कृतिक पक्षों को उजागर किया हैं।इक्कीशवी शताब्दी के संस्मरण कारो में ''विश्वनाथ प्रसाद तिवारी'' के यात्रा संस्मरण 'आत्मा की धरती', 'अंतहीन आकाश', 'एक नाव के यात्री' ।'विद्यानिवास मिश्र' के संस्मरण 'इमली के वीया','घर का जोगी जोगडा'। ''कृष्णा सोबती'' के संस्मरण 'हम हशमत', 'सोबती एक सोहबत',शब्दों के आलोक, निराला ,महादेवी वर्मा,काशीनाथ सिंह,ममता कालिया,नरेंन्द्र कोहली,मैत्रेयी पुष्पा ,निर्मला जैन आदि कई साहित्यकारों ने संस्मरण लिखें। साहित्यक संस्मरण के अन्तगर्त सर्वप्रथम 'स्मृतियों के शुक्ल पक्ष' है। जिसे राजकमल राय ली ने बड़े सुन्दर ढ़ंग से लिखा हैं।

दूसरा साहित्यक संस्मरण बहुत महत्वपूर्ण है।क्योंकि 'कान्तिकुमार जैन जी ''ने आत्मकथ्य के अंदाज में इस संस्मरण को शीर्षक दिया हैं ''जो कहूॅगा सच कहूॅगा'' यह साहित्यिक संस्मरण जहॉ तक लेखकों से जुडता है वही पत्रकार आलोचक , प्रोफेसर ,शोधकर्ता आदि से भी जुड़ा हुआ दिखाई देता है। जैन जी ने इसका आरम्भ बसार बख्य के शेर से किया है।–

चाहता हैं दिल कि मैं भी सच कहूॅगा।

क्या करू मगर हौसला नहीं होता ।

और इसी आधार पर लेखक का शीर्षक निर्भर करता हैं।हौंसला नये जमाने की देन है।इसलिए संस्मरण तेजी से लिखे जाने लगे हैं लेकिन लेखक ने आरंम्भ से ही स्वीकार किया हैं कि बह सब लिखना चाहते हैं ,मगर हौसला नही हैं इसमें लेखक ने आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, राजनाथ, गजानन्द ,जीवन लाल वर्मा ,विद्रोही ,मुकुटधर, नामवार सिंह, राम विलास शर्मा, शिव मंगल सिंह 'शुमन',एवं श्यामा चरण दुवे जी के विषय में लिखा गया हैं। कुल चार शीर्षक हैं ,विज्ञप्ति, व्याप्त, प्रवृति एवं आत्मस्वीकृति ।यह संस्मरण पाठक को सभी बड़ी हस्तियों सें मिलवाने का काम करता हैं तथा जीवन में किस तरह उन्होंनें ताना बाना बुना इस पर भी प्रकाश डालता हैं इस संस्मरण में कुछ ऐसे वाक्य भी हैं जिन्हें पढ़कर सुनकर पाठक वा श्रोता अचंभित हो सकते हैं लेकिन लेखक ने उन्हें हटाया नहीं है।[4]

हिंदी साहित्य में संस्मरण विद्या को नया स्वरूप देने का श्रेय कान्तिकुमार जैन जी को है।कान्तिकुमार जैन जी के संस्मरण में दलित विमर्श, नयी कविता ,आलोचना ,छायावाद ,प्रयोगवाद ,प्रगतिवाद ,संम्मानों और पुरूस्कारों को यर्थाथ, सामाजिक परिवर्तन भाषा का संम्पूर्ण अधिकार हो या स्त्री विमर्श सभी पर उन्होंनें बेबाक टिप्पणी की हैं । बात स्त्री विमर्श की हो तो कान्तिकुमार जैन अपने संस्मरणों में स्त्री को परिस्थितियों से लड़ने और समय के हिसाब से अपने आप को बदलने का आवहान करते हैं।कान्तिकुमार जैन जी ने सागर विश्वविद्यालय के भित्ती चित्र के लिए एक कविता लिखी थी –

अबला सदा अबला रहेगी,

यदि नही वह मान्य हो,तो वह मॉग का सिंदूर पोछें।

यदि नहीं यह मान्य तो ,वह चूड़ियों को तोड फेकें।

हथेली की लालिमा का पुॅछना, वह सह सकेगी क्या ,अबला सदा अबला रहेगीं [5]

हालाकि इस कविता का बढ़ा विरोध हुआ था और कान्तिकुमार जैन जी से कहा गया था कि कान्तिकुमार से नारी विरोधी कविता की उम्मीद नहीं थी । कान्तिकुमार जैन जी ने कहते है कि मेरी यह कविता नारी विरोधी नहीं है। नारी को स्वयं को अबला समझने की मनोवृत्ति को चुनोती देने बाली हैं ,क्योंकि नारी जिनकों सौभाग्य की निशानी मानती है, वो कहीं ना कहीं दुबलताओं की निशानी मानी जाती हैं। 'सीमोन द बोउवर' ने बाद में यहीं बात कही भी कि ''स्त्रीयां पैदा नहीं होती बनाई जाती हैं''। बहराल भित्रिपत्र में कान्तिकुमार जी की सामाजिकता भी बढ़ी और अभिव्यक्ति के खतरो से आगाह भी किया ।

डॉ. कान्ति कुमार जैन के संस्मरण महा आख्यान हैं ,जो गहरे और प्रखर बौद्धिक विमर्श का केन्द्र बन गए है ,उन्होंनें संस्मरण विधा को नई पहचान दी और उसके नये मापदंण्ड तैयार किये हैं। उनके संस्मरणों का मूल्यांकन नैतिकता के आधार पर नहीं किया जा सकता। नैतिकता के उनके अपने मापदंण्ड हैं और सच कहने में यदि नैतिकता आड़े आती हैं तो वे नैतिकता के बजाय सच के साथ खड़े होते हैं। कान्तिकुमार जैन के संस्मरण साहित्यिक इतिहास दृष्टि की जड़ता के बन्द कपाट खोलने का गम्भीर प्रयास हैं तथा आधुनिक को औपनिवेशिकता के दबाव से मुक्त कराने का अनुष्ठान भी। लौटकर आना नहीं होगा ,तुम्हारा परसाई ,जो कहूॅगा सच कहूॅगा, और अब तो बात फैल गई संस्मरण पुस्तकें मजबूती से पॉव जमाए खड़ी तो है ही ,साथ ही समकालीन सरोकारों का सामना भी बहुत तार्किक और प्रभाव पूर्ण ढ़ग से करती है।कान्तिकुमार जी हमें अपने ही सांस्कृति विकास और देशज आधुनिकता की नई पहचान भी कराते हैं यादों की परतों को रोज–रोज खोजते हुए स्मृतियों को जीवन्त बनाते हैं, जी भरकर लिखते हैं जी भरकर जीते हैं।[6]

कान्तिकुमार जी भाषा विद् है अतः लोक शब्दों का सफल प्रयोग में सिद्धहस्त हैं।आवश्यकता होने पर वे नये शब्द भी गढ़ लेते हैं।विभिन्न प्रकार की समृद्ध भाषा उन्हें संस्मतृ व्यक्ति और उनके परिवेश उनकी रचना प्रक्रिया ,सामाजिक सम्बन्धों एवं सरोकारों का पूर्ण आकलन करने में समर्थ बनाती हैं।

कान्तिकुमार की भाषा विज्ञान से संम्बधित पुस्तकें –छत्तीसगढ़ी बोली,व्याकरण और कोश इस शब्द कोश में लगभग 6000 शब्दों की संख्या है।इस पुस्तक के खण्ड़ एक –में छत्तीसगढ़ की बोलियों का सामान्य सर्वेक्षण है। पुस्तक के दुसरे खण्ड– में छत्तीसगढ़ी बोली का सामान्य परिचय ।तृतीय खण्ड़ –में छत्तीसगढ़ी का व्याकरण प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक के चतुर्थ खण्ड –में छत्तीसगढ़ी शब्द कोश हैं।कान्तिकुमार जी की भाषा विषयक पुस्तक ''इक्कीशवीं शताब्दी की हिंदी है। [7]

कान्तिकुमार जी कहते कि संपादन कौशल में स्वायत्तत्ता प्राप्त करने के लिए मैंने कोई अध्ययन नहीं किया हैं।बचपन में पत्रिका का संपादन बाल–कौतुकवश बैकुण्ठ पुर में आठवी कक्षा में ही किया था ।

कान्तिकुमार जी अपने हम उम्र मित्रों के साथ कुछ न कुछ लिखते थे। बालोचित कविताएँ,कहानियॉ ,आप–बीती आदि । उनके बड़े उन कविताओं को सुधारते थे। उस हस्थ लिखित पत्रिका का नाम 'बाल–जीवन' रखा गया और संपादक कान्तिकुमार जी को बनाया गया ।कान्तिकुमार जी की पहली कविता उस पत्रिका में छपी थी ।

कृष्ण कान्ति जीतू मिलकर करने लगे विचार।

पके पके ये आम लगे हैं कैसे खायें यार।

लगा पेड़ पर सीढ़ी जल्दी चढ़ गये कृष्ण कुमार।

गदराये आमों को चुन–चुन टपकाये दो–चार ।

जीतू तब चिल्लाकर बोला हो जाओ होशियार ,

बागों का माली आता है,खूब पडेगी मार ।

ऊॅची डाली पर से कूदे,भागे कृष्णकुमार ,

कान उमेठूॅगा मैं सबके जो आये अगली बार ।।.[8]

सागर विश्वविद्यालय में 1951 में भित्ती पत्र का संपादन नियुक्त किया गया पुनःसागर विश्व विद्यालय में 1978 में ईसुरी पत्रिका का संपादन किया ।ईसुरी पत्रिका बुन्देलखण्ड के साहित्य संस्कृति और कला का विश्वकोश है ।जबलपुर के प्रसिद्ध पत्रकार और कामताप्रसाद गुरू के आत्मज रामेश्वर गुरू ने तो अपना वैश्विक तोष खाना ही ईसुरी के लिए खोल दिया था ।सुधा अमृतराय ने अपनी मॉ सुभद्रा कुमारी चौहान और पिता लक्ष्मण सिंह चौहान की बहुत प्रकाशित एवं अप्रकाशित सामग्री ईसुरी के लिए भेज दी गई।ईसुरी कान्तिकुमार जैन जी के संपादन की गौरव पत्रिका थी अतःबुन्देंलखण्ड की लोक संस्कृति पर केंन्द्रित ईसुरी नामक पत्रिका का संपादन कान्तिकुमार ने 1992 तक बड़ी ही कुशलता से किया । भारतीय लेखक 'के परसाई अंक का परसाई की खोज नाम से अतिथि संपादन बड़ी ही कुशलता से किया । [9]

डॉ. कान्तिकुमार जैन के संस्मरण साहित्यिक इतिहास दृष्टि की जड़ता के बन्द कपाट खोलने का गम्भीर प्रयास है तथा आधुनिता को औपनिवेशिकता के दबाव से मुक्त कराने का अनुष्ठान भी है। लौट कर आना नही होगा,तुम्हारा परसाई, जो कहूॅगा सच कहूॅगा ,और अब तो बात फैल गई संस्मरण पुस्तकें मजबूती से पॉव जमाए खड़ी है।तो साथ ही समकालीन सारोकारों का सामना भी बहुत तार्किक और प्रभावपूर्ण ढ़ंग से करती हैं। जैन जी हमें अपने ही सांस्कृतिक विकास और देशज आधुनिक की नई पहचान भी कराते हैं।

डॉ. कान्तिकुमार जैन का सामाजिक व्यक्तित्व इतना अगाध, व्यापक और समर्थ है कि उनके कोई आख्यान चाहे शिव कुमार श्रीवास्तव पर लिखा हों, हरिशंकर परसाई पर लिखा हों या बैकुण्ठपुर में बचपन –स्वयं पर ,वे जीवनी में संस्मरण , संस्मरण में शोध ,शोध में समीक्षा और समीक्षा में

लोक–जीवन का और इन सब में व्यंग की तीखा–तुर्श स्वाद भरते हैं कि पाठक आख्यान के नये रूप से परिचित होता जाता और पूरा पढ़ने की उसकी मजबूरी इतनी कि भाषा का बंन्धन वह छोड़ नहीं पाता ।

डॉ.कान्तिकुमार जैन की ऐन्द्रिक चेतना–शक्ति ,इच्छाशक्ति ,संकल्प शक्ति उर्ध्वगामिनी रही ।उनका विवेकशील चेतन व्यक्ति यातनाओं और मृत्यु तक से भी भयभीत नहीं होता था । कान्तिकुमार जैन का साहित्य दान बड़े–बड़े धनाधीशों के लाखों–करोड़ों के दान से कई लाख गुना अधिक मूल्यवान हैं।

संदर्भ ग्रंथ–

1 बैकुण्ठ पुर में बचपन,कान्तिकुमार जैन, 2011,समसामायिक प्रकाशन्

2 कान्तिकुमार जैन , संस्मरण को जिसने वरा हैं ,सुरेश आचार्य ,लक्ष्मी पाण्डेय ,2014

3 लौट कर आना नहीं होगा ,कान्तिकुमार जैन, 2002,वाणी प्रकाशन्,

4 कान्तिकुमार जैन , संस्मरण को जिसने वरा है ,सुरेश आचार्य ,लक्ष्मी पाण्डेय,2014 पृ ०सं० 50

5 कान्तिकुमार जैन , संस्मरण को जिसने वरा है ,सुरेश आचार्य ,लक्ष्मी पाण्डेय ,2014 , पृ०सं० 241

6 कान्तिकुमार जैन , संस्मरण को जिसने वरा है ,सुरेश आचार्य ,लक्ष्मी पाण्डेय ,2014 , पृ०सं॰

7 छायावाद की मैदानी और पहाड़ी शैलियॉ, 2007 , कान्तिकुमार जैन ,सरोज प्रकाशन्

8 लौट जाती हैं उधर को नजर ,कान्तिकुमार जैन,वाणी प्रकाशन,2017 पृ० सं० 15

9 कान्तिकुमार जैन , संस्मरण को जिसने वरा है ,सुरेश आचार्य ,लक्ष्मी पाण्डेय,2014 ,पृ० सं० 48, 49